International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF: 5.22
www.hindijournal.com
Volume 1; Issue 1; November 2015; Page No. 28-30

जायसी का अभिव्यंजना–शिल्प

डॉ शिवदत्त शर्मा

पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हिप्र

मलिकमुहम्मद जायसी हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। मध्यकाल का साहित्यअपनी अलग पहचान रखता है, क्योंकि भाषा की दृष्टि से भी यह काल महत्व पूर्ण है। एक ओर तुलसीका संस्कृत निष्ठ अवधी में लिखा ग्रंथ रामचरित्मानस है तो दूसरी ओर जायसी जैसे कवि का ग्रामीण अवधी में लिखा महाकाव्य पद्मावत उपलब्ध होता है। वस्तुतः भाषा विचारोंके आदान–प्रदान का सशक्त माध्यम है तथा शैली माध्म के गौरव को वहन करने वाली होती है। भाषा को समर्थ कवि का सहचर्य मिलते ही भाषा गौरवान्वित हो उठती है। रचनाएं किसी भी भाषा को अमरत्व प्रदान कर देतीं हैं। इतिहास साक्षी है कि संस्कृत और ग्रीक भाषाओं में रची रचनाएं आज इसलिए अमर हैं क्यों कि ये महान कवियों की लेखनी का चमत्कार था,। आज जहां ये रचनाएं अमर हैं वहीं भाषा जिसमें ये रचनाएं की गईं थीं उन्हें भी अमर कर गई।

कविवर जायसी भक्तिकालीन कवियों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। सूफी प्रेमाक्ष्यानक काव्य धारा के श्रेष्ठ कवियों में उनकी गिनती की जाती है। उनकी ख्याति का मुख्य आधार उनके द्वारा रचित महाकाव्य पद्मावत है। उन्होंने ठेठ हिन्दी में रचना की है, परन्तु जिन परिस्थितियों में इन्होंने रचना की हैयह श्लाघ्य है क्योंकि उस समय ठेठ अवधी में लिखना बडा ही कठिन और दुश्कर था। मध्य काल तक संस्कृत में रचनाएं हो रहीं थीं परन्तु 1000 ई तक आतेआते प्राकृत भाषाओं में साहित्यिक रचनाएं होने लगीं थीं। अबतक संस्कृत साहित्यमें रचनाओं का एक छत्र साम्राज्य समाप्त हो चुका थाऔर उसके स्थान पर अपभ्रंश तथा प्राकृत का प्रचलन हो चुका था। जायसी के काल तक ये भाषाएं साहित्यिक रूप धारण कर चुकीं थीं, फिर भी लोकजीवन से इनका सम्पर्कअधिक गहरा नहीं हो सका था। दूसरी ओर कोई भी सर्वमान्य सम्पन्न भाषा साहित्यिक रूप धारण नहीं कर पाईथी। चारणों की भाषा राजस्थनी मिश्रित भाषा थी। तथा वह परिष्कृत ळाषा नहीं बन सकी। कबीर आदि सन्तों ने शुद्ध भाषा का प्रयोग किया जो उनके आसपास बोली जा रही थी परन्तु वह भी अधिक समय तक साहित्यिक स्वरूप धारण नहीं कर ही इस भाषा कापाई।

इस तरह सूफियों ने क्षेत्रीय बोली को ही अपनी भावाभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। यह साहसिक उपक्रम था क्यों कि इस भाषा में इससे पहले काव्य रचनय नमें हीं हुई थी। हिन्दी सूफी साहित्य की प्रारम्भिक कृतियों में पद्मावत का उल्लेख किया जाता है। अवधी भाषा का मानक और आदर्श स्थापित करने में इस भ्ययषा का महत्व पूर्ण स्थान है। यह सत्य है कि पद्मावत की भाषा ठेठ अवधी है परन्तु आगे चलकर अवधी भाषा का आदर्श स्थापित करने में इस रचना का महत्व पूर्ण योगदान है। अतः यह कहा जा सकता है कि पद्मावत् के आधार को ग्रहण करके ही इस भाषा का परिष्कार तथा सुसंस्कार किया गया। आगे चल कर हिन्दी साहित्य के कवि तुलसी दास ने साहित्यिक अवधी भाषा में रामचरित मानस जैसे महान काव्य की रचना की। अतः अवधी भाषा को साहित्यिक भाषा बनाने में जायसी का विशेष योगदान है, इसमें सन्देह नहीं। जायसी ने अपनी अभिव्यंजना शैली से साहित्य को कितना स्मृद्ध किया है यह विवेचन यहां प्रेत्य है।

1. भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पद्मावत का महत्व

प्द्मावत का योगदान इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसके सहयोग से ही सोहलवीं सदी की अवधी भाषा तथा उसके स्वरूप को समझने में काफी सहायता प्राप्त हुई है। जायसी की भाषा पूर्णतः लोकव्यवहार की भाषा थी परन्तु फिर भी कवि ने इसे साहित्यिक रूप प्रदान करने पर बल दिया। इस संदर्भ में डॉ रामकुमार वर्मा ने ठीक ही लिखा है कि– पद्मावत का महत्व उसके सुरक्षित रूप में है। अतः जायसी की रचना में तत्कालीन अवधी का रूप बच सका है। हिन्दी साहित्य के जायसी ही ऐसे पुराने लेखक हैं जिनकी कृति वास्तविक रूप में हमारे सामने है। जायसी ने तात्कालीन बोलचाल की अवधी में अपनी रचना की। इनकी कृति स्वाभाविक बोलचाल के यथातथा शब्दों से पूर्ण है। डॉ जार्ज ग्रियर्सन ने भी पद्मावत की भाषा को सोहलवीं शताब्दी में बोली जाने वालीभाषा ज्वलन्त उदाहरण है। का उपरोक्त टिप्पणियों से एक बात तो साफ हो जाती है कि इस भाषा के द्वारा तात्कालीन अवधी आदि भाषाओं का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन करने में अत्यधिक सहायता प्राप्त हुई।

2. ठेठ ग्रामीण अवधी का प्रयोग

प्द्मावत में प्रयुक्त अवधी वास्तव में वह अवधी है जिसे बोलचाल की अवधी भाषा कहा जा सकता हैं जायसी ने शुद्ध तात्कालिक लोक प्रचलित और व्यवहृत अवधी का प्रयोग किया है।

टाचार्य रामचन्द्र शुक्ल के विचार इस सम्बन्ध में विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं– पदमावत की भाषा को पूर्वी हिन्दी की ठेठ अवधी बोली बतलाया गया है, जिसमें बोलचाल का पुट अधिक है। अवधी की खालिस बेमेल मिठास के लिए पद्मावत का नाम बराबर लिया जाएगा।

पं आयोध्यासिंह उपाध्याय लिखते हैं– पदमावत में ग्रामीण भाषा का प्रयोग हुआ है। जायसी ने अनेक ठेठ ग्रामीण शब्दों का प्रयोग किया है जिनमें कई ऐसे हैं जिनका अर्थ बोध कठिन है। कहीं कहीं इनकी भाषा अधिक गंवारू हो गई है जिससे इनके पदों में अरुचि पैदा होने लगती है।

ठसी तरह डॉ शिवसहाय पाठक का मत भी ध्यान देने योग्य है– लोक भाषा का जायसी जैसा पुष्ट और सार्थक प्रयोग हिन्दी के किसी कवि ने नहीं किया। प्रायः सभी श्रेष्ठ कवि संस्कृत निष्ठभाषा, संस्कृत पदावली, और संस्कृत के काव्य शास्त्र का पदपद पर आश्रय लेते हैं किन्तु धरती पर प्रवाहित होने वाली सर्व सुलभ सामान्य लोक भाषा की गंगा को काव्य–तीर्थ की छाया तले ले जाने का भागीरथी प्रयास किसी श्रंष्ठ कवि ने नहीं किया। इस दृष्टि से जायसी की भाषा का बडा महत्व है।

ठस विवेचन से यह स्पष्ट है कि जायसी ने परिष्कृत अवधी का प्रयोग नहीं किया अपितु उन्होंने अवध प्रान्त में प्रचलित लोक अवधी भाषा का ही प्रयोग किया है। इस सन्दर्भ में डॉ द्वारिका प्रसाद के विचार द्रष्टव्य है–

पद्मावत की भाषा पूर्णतया बोलचाल की अवधी है। इसमें ग्रामीण प्रयोगों की प्रचुरता है, जो लोक वाणी के यथार्थ रूप को प्रस्तुत करती

है। जिसमें जनभाषा का उत्कृष्ट माधुर्य है जो सहज एवं स्वाभाविक बोली से अधिक निकट है, तथा तात्कालीन बौलचाल की के यथातथ्य शब्दों से परिपूर्ण है। इसमें शास्त्रीय यह निर्विवादसाज–श्रृंगार के स्थान पर नैसर्गिक जैसा सफल और सार्थक प्रयोग किया है वैसा अन्यत्र कहीं नहीं सौंदर्य विद्यमान है तथा जो 16 वीं शताब्दी के उस अवधी रूप को प्रस्तुत करती है जिसमें अवधवासी प्रायः उस समय बोला करते थे। अतः यह निर्विवाद सत्य है कि जायसी ने पद्मावत में लोकभाषा का जैसा सफल और सार्थक प्रयोग किया है वैसा अन्यत्र कहीं नहीं मिलता है। वस्तुतः भाषिक स्तर पर पद्मावत लोक भाषा के रंगों से रंजित है।

3. शब्द–चयन

यह सत्य है कि जायसी की भाषा ठेठ अवधी है, पन्तु उसमें संस्कृत के तत्सम, तद्भव, तथा विदेशज सभी प्रकार के शब्दों का खुल कर प्रयोग हुआा हे। यहां तक कि कहीं कहीं जायसी ने अर्द्धतत्सम शब्दों का प्रयोग भी किया है–

क) तत्सम शब्द– पद्मावत में जायसी ने तत्सम शब्दों का प्रयोग एक विद्वान कवि के रूप में किया है जिसे संस्कृत का ज्ञान अवश्य था। उनके प्रयोग देखिए–

मेघ कनक, इन्द्रासन, प्रीति, अरूप, अवधूत, सारंग, कंचन, हंसगामिनी, हस्ति, वासुकि, विष, मसि, दिगम्बर, आदि।

ख) अर्द्ध तत्सम शब्द– असुपति, जातरा, विरिख, दरपन, विस्वनाथ, दिस्टी, अथर्वन, रिखेश्वर, आदि

ग) तद्भव,

कूंज, अमिअ, सुआ, संदेसरा, किस्न, बरौठा, आदि

घ) देशज शब्द

पद्मावत में देशज शब्दों की भरमार है। इन शब्दों की व्युत्पत्ति के विषयमें कुछ नहीं कहा जा सकता। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं–

धमोई, चाला, ठेली, झोल, गरेडी, खुसट, कसनी, ढांखा, गडुआ, खांचा, लुचलुची, हूल, धमारी, । आदि।

च) विदेशज शब्द

प्दृमावत में विदेषी शब्दों का प्रयोग खुल कर हुआ है। इनमें कुछ एंसे भी हैं जो लोक जीवन में पूर्णतः घुल मिल गए हैं। कहीं कहीं कवि ने विदेशी शब्दों का परिवर्तित रूप भी प्रयुक्त किया है,

उदाहरण देखिए

सुलतान, सहमत, मोहरा, मीर, जरदा, खुरासान, तबला, बजीर, मुहताज, मुरसिंद, मुसुकी, दुनी, दस्तगीर, रोशन, सिरताज, मुबारक, खुरासान, उमर ख्ख्वाजा, अदल, वलक, मखदमू, खिताब, गिलावा, अलावल आदि।

लोकोक्तियां और मुहावरे

कवि जायसी भाषा के स्वामी थे, उन्होंने अपनी मर्जी से भाषा को नचाया है। इसके लिए उन्होने एक सुघड भाषा विद् की तरह अपनी भाषा ठेठ अवधी में हर प्रकार के मुहावरे तथा लोकोक्तियों का प्रयोग एक सहजता से किया है। जिन मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग उन्होंने किया है वे आज भी अवध प्रदेश में प्रचलित हैं। इस संदर्भ में डॉ गौतम ने लिखा है कि–भाषा को चुस्त व मुहावरे दार बनाने के लिए लोकोक्तियों की निजतान्त आवश्यकता होती है। पद्मावत में लोकोक्तियों का सुन्दर व प्रचुर प्रयोग हुआ हे। समस्त पद्मावत में जायसी ने अतिसुन्दर मुहावरों की संयोजना की है। इससे इनकी भाषा की व्यंजकता में चार चांद लग गए हैं। कुछ मुहावरे देखिए–

1. गउ सिंह रेंगहिं एक बाटा, दूनी पानि पियहिं एक घाटा। गाय और सिंह का एक घाट पानी पीना
2. मुख कह आन पेट बस आन मुंह में और पेट में और
3. असबड बोल जीभ मुंह छोट छोटे मुंहबडी बात मुहावरों के अतिरिक्त लोकोक्तियों का भी सुन्दर प्रयोग पद्मावत में मिलता है। ये लोकोक्तियां जहां सांसंरिक तथ्यों को उद्घाटित करतीं हैं वहीं मानव समाज में प्रचलित मान्यताओं, दार्शनिकविचारों, धार्मिक सिद्धान्तों तथा व्यावहारिक पक्षों और नैतिक धारणाओं पर भी प्रकाश डालतीं हैं। कुछ उदाहरण इस तथ्य को स्पष्ट कर देंगें–

1. प्रेम घाव दुख जान न कोई प्रेम के घाव के दर्द को कोई नहीं जानता।
2. पै जो दई लिखा को मेटा विधाता के लिखे को कौन मिटा सकता है।
3. जहां सत्त तहं धरम संघाता जहां सत्य है वहां धर्म साथी होता है।
4. यह मन कठिन मरै नहिं मारा यह मन बडा विकट है मारने से भी नहीं मरता।

5. शब्दशक्तियां

पद्मावत में अभिधा, लक्षणा, तथा व्यंजना तीनों ही शब्द शक्तियों का प्रयोग देखने को मिलता है। भाषा में अर्थ गाम्भीर्य और चमत्कार पैदा करने के लिए इन शब्द शक्तियों का प्रयोग पदमावत में हुआा है। कुछ उदाहरण देखिए–

क) लक्षणा शब्द शक्ति

1 वज्रहिं तिन कै मारि उडाई। तिनहें वज्र की देह बनाई।
2 तुरुक बोलावहिं बोलहिं बाहां।
3 ससि मुख अंग मलैगिरि रानी।

ख) व्यंजना

1 हंस जो रहा शरीर महं पांख जरे तन थाक।
2 कुंआ ठार जल जैसे बिछोवा। जाल भरै नैनन्ह तस रोवा।
3 लेजुरि भई नाह बिनु तोही। कुआं परी धरि काढहुं मोही।।

6. काव्यगुण

काव्यशास्त्र में तीन गुणों माधुय, ओज, प्रसाद का महत्व प्रतिपादित है। पद्मावत में भी अवलोकन करने पर प्रतीत होता है कि इसमें भी तीनों गुणों का सुन्दर मिश्रण हुआ है। अन्य गुणों की तुलना में माधुर्य गुण पदमावत में अधिक प्रयुक्त हुआ है। गोराबादलयुद्ध वर्णन खण्ड में ओज गुण की उत्पत्ति, वीरखविभत्स रसों का परिपाक हुआ है। कवि ने प्रसाद गुण का भी प्रयोग किया है।

क) प्रसाद–गुण

आइ सरद रितु अधिक पियारी। तौ कुंवार कातिक उजियारी।
पदमावति मैं पूनिउं कला। चौदह चांद उगै सिंघला।
सोरह करा सिंगार बनावा। नखतन्ह भरे सुरुज ससि पावा।
भा निरमर सब धरति अकासू। सेज संवारि कीन्ह फुल डासु।

ख) ओज–गुण

मैं बगमेल सेल घनघोरा। औ गज पेल, अकेल सो गोरा।
सहस कुंवर सहसहु सुत बांधा। भार पहार जुझि कहं काधौं।
लागे मरै गोरा के आगें। बाग न मुरै घाव मुख लागैं।
जैसे पतंग आगि धंसि लेही। एक मुएं, दोसर जिउ देहिं।

ग) माधुर्य गुण

सुनि सो बात राजा मन जागा। पलक न मार, पेम चित लागा।
नैनन्ह ढरहिं मोति और मूंगा। जस गुर खाइ रहा होइ गूंगा।

हिएं की जोति दीप बहु सूझा। यह जो दीप अंधिअर भा बूझा।
उलटि दिस्टि माया सौ रूठी। पलटि न फिरी जानि कै झूठी।
पदमावत में मसनवी शैली का अनुसरण करते हुए चौपाइयों केबाद एक दोहे का क्रम रखा है। इसके साथसाथ कवि ने प्रतीकात्मक, चित्रात्मक, वर्णनात्मक, तथा संवादात्मक और अलंकृत शैलियों का भी सफल प्रयोग किया है। पदमावत समासोक्ति तथा अन्योक्ति के लिए एक उल्लेखनीय ग्रंथ कहा जा सकता है।

7. बिम्बात्मकता

जायसी ने पदमावत में अनेक बिम्ब प्रस्तुत किए हैं। अलाउद्दीन सेन आठवर्ष तक चितौड का घेरा डाल कर पडा रहा परन्तु उसे विजय नहीं मिली। जायसी ने इस का बिम्बात्मक चित्रण बडी सुन्दरता से किया है–

> आठ बरिस गढ छेका अहा। धनि सुलतान कि राजा महा।
> आइ साहि अंबराउ जो लाये, फरे झरैं पै गढ नहिं पाये।

इसी तरह किलकिला समुद्र का वर्णन करते हुए जायसी ने बिम्बों की रचना की है।

8. अलंकार प्रयोग

टाचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने पदमावत को समासोक्ति कहा है। जायसी ने प्रायः सब प्रकार के अलंकारों का प्रयोग किया है। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, व्यतिरेक, दृष्टात, यमक आदि सब तरह के अलंकारों का प्रयोग किया है। उत्प्रेक्षा अलंकार का उदाहरण देखिए–

उत्प्रेक्षा अलंकार– पहिरे खुंभी सिंहल दीपा। जानहु भरी कचपची सीपी।
कंचन रेख कसौटी कसी, जनु घन मांह दामिनी परगसी।

इसी प्रकार व्यतिरेक, दृष्टान्त, यमक, अनुप्रास आदि सभी अलंकारों का सुन्दर प्रयोग पदमावत में मिलता हैं।

9. छन्द विधान

प्दमावत में दोहा चौपाइ छन्द का ही प्रयोग हुआ है।कवि ने प्रायः सात चौपाइयों के बाद एक दोहा का क्रम अपनाया हैं। डॉ राम पूजन तिवारी के अनुसार पदमावत में सर्वथा दोहों की मात्राओं का नियम ठीक नहीं है। मात्रिक छन्द होने के कारण नियम को ध्यान में महीं रखा हैं। सम्भवतः जायसी ने काव्यगत भाव की रक्षा के लिए अनुकूल शब्द विधान की ओर ध्यान दिया हैं। यह भी सत्य है कि उनके काव्य पर अपभ्रंश का भी प्रभाव हो सकता है।
ठस तरह पदमावत की भाषा में अनेक साहित्यिक विशेषताएं हैं। जायसी ने ठेठ अवधी में काव्य रच कर एक साहस का परिचय दिया है। आज पदमावत में संजो कर रखी भाषा हिन्दी साहित्य की धरोहर है।

10. संदर्भ सूचि

1. जायसी ग्रन्थावली – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृ 123
2. उत्तर भारत की संत परंपरा–आचार्य परशुराम चतुर्वेदी पृ 54
3. जायसी ग्रंथावली – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृ 76 उपरोक्त नागमती वियोग खण्ड